जहानाबाद जिला में शस्य प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता : एक अध्ययन

रोखसार फातमा

शोध सार

जहानाबाद जिला, राज्य के कृषि विशेषतानुसार ही कृषि प्रधान क्षेत्र हे। जिला का अधिकांश भाग कृषि-योग्य है। यहाँ की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या कषि-कार्य में लगी है। दक्षिणी गंगा मैदानी भाग होने के कारण यहाँ की 80 प्रतिशत से अधिक भूमि पर कृषि कार्य की जाती है। अगर सिंचाई की समुचित व्यवस्था कर दी जाय तो यहाँ पर साल में तीन-तीन फसलों की खेती हो सकती है, परन्तु खेतों के आकार और जोत-विखण्डन की प्रक्रिया कृषि उत्पादन में कफी कमी कर देती है।

Keywords : ज़िला,जनसंख्या, गंगा के मैदानी भाग, सिंचाई, जोत विखण्डन, खेतों के आकार।

जहानाबाद जिला में तीन मुख्य फसलें उगाई जाती है (क) रब्बी, (ख) खरीफ एवं (ग) जायद।

(क) रब्बी की फसलें :- यह बंसत ऋतु की फसल है। यह फसल अक्टूबर-नवम्बर माह में बोई जाती है। इसे जाड़े का फसल भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत गेहूँ सबसे मुख्य फसल है। गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, आलू, राई, इस फसल के अन्तर्गत बोये जाने वाली फसल है। इसकी खेती में सिंचाई की आवश्यकता अधिक नहीं पड़ती है। इसलिए सिंचाई की सुविधा के विस्तार के साथ-साथ रब्बी की फसल का भी विस्तार हुआ है। रब्बी के अन्तर्गत नगदी फसलों में तम्बाकु, गन्ना, फल और सब्जी आदि प्रधान है।

ख. खरीफ की फसलें :- यह फसल जून-जुलाई महीनों में बोई जाती है और अक्टूबर-नवम्बर माह में काट ली जाती है। बिहार/जहानाबाद में खरीफ फसलों को भदई तथा अगहनी फसलों में विभक्त कर लिया गया है। अत: इसे वर्षा की फसल भी कहते है। इसके अन्तर्गत शीघ्र तैयार होने वाली फसलें बोई जाती है, जिनमें धान, गन्ना, तेलहन, ज्वार, बाजरा, मक्का और अरहर आदि मुख्य है। कुछ माली फसल जैसे गन्ना भी इसी के अन्तर्गत बोई जाती है। खरीफ फसलों को सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है।

ग. जायद की फसलें :- यह फसल मार्च-जून में बोई जाती है और जुलाई-अगस्त में काट ली जाती है। इसके अन्तर्गत मकई, ज्वार, हरा चना, सब्जियाँ आदि की खेती की जाती है। जायद की फसल की गर्मी की फसल भी कहते हैं।

महत्त्वपूर्ण फसलों का उत्पादन एवं वितरण:- जिले में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन होता है, परन्तु भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार उनके उत्पादन में भिन्नता मिलती है, जिसे निम्न तालिका से दिखलाने का प्रयास किया जा रहा है :-

शोध छात्रा, भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।

तालिका-1

मुख्य फसलों के अन्तर्गत भूमि तथा उसका उत्पादन (2015-16)

क्र0सं0	फसल	क्षेत्रफल	बोया गया कुल	उत्पादन मिट्रिक
		हेक्टेयर में	क्षेत्रफल का प्रतिशत	टन में
1.	धान	91,922.00	53.08	1,16,551
2.	गेहूँ	37,083.00	21.41	69,100
3.	चना	16,083.00	9.48	19,086
4.	मसूर	10,914.00	6.30	9,720
5.	अन्य फसल	4,914.00	2.84	---
6.	खेसारी	3,741.00	2.16	9,720
7.	आलू	3,300.00	1.91	39,280
8.	मक्का	1,415.00	0.82	1,119
9.	पीस (Peas)	1,212.00	0.79	963
10.	अरहर	697.00	0.40	704
11.	तिल	488.00	0.28	193
12.	कुर्थी	342.00	0.20	231
13.	मुंग	281.00	0.16	162
14.	उरद	335.00	0.14	153
15.	मूंगफली	201.00	0.12	168

स्त्रोत :- सांख्यिकी विभाग, जहानाबाद।

तालिका-2

जहानाबाद में फसलों के औसत उत्पादन की दर (कि0 ग्रा0 प्रति हेक्टरों) में

क्र0सं0	फसल	2001-02	2011-12	2015-16
1.	धान	1348	1670	1788
2.	गेहूँ	782	821	2048
3.	मक्का द्धगरमाऋ	580	570	2751
4.	मक्का द्धभदईऋ	610	682	2650
5.	अरहर	1650	2142	1870
6.	मसूर	508	848	913
7.	खेसारी	14110	20522	15301
8.	चना	648	529	478
9.	तेलहन	517	417	540
10.	आलू (अगहनी)	1180	1715	1650
11.	आलू (रब्बी)	1755	1485	1201
12.	गन्ना	21345	14187	13900
13.	प्याज	1268	1401	1208

स्त्रेत :- सांख्यिकी विभाग, जहानाबाद।

फसलें :-

यहाँ विभिन्न फसलें भिन्न-भिन्न मौसमों में उपजायी जाती है। ये फसलें खरीफ, रब्बी एवं गरमा के रूप में है। जिन्हें चित्र में दिखाया गया है। निम्नलिखित फसलें मुख्य हैं। जिनमें धान, गेहूँ मकई आदि है। ये फसलें अलग और साथ-साथ में भी पैदा की जाती है।

धान :- धान जहानाबाद जिले की सबसे प्रमुख खाद्यान फसल है। जिले में इसकी तीन उपजें, भदई, अगहनी तथा गरमा होती है। परन्तु अगहनी धान सबसे प्रमुख है। जिले के काको, घोषी, जहानाबाद इत्यादि प्रखण्डों में धान की अच्छी खेती की जाती है। 2001-02 में इसका उत्पादन 1.32 लाख मिट्रिक टन हुआ था जो 2015-16 में बढ़कर 1.48 लाख मिट्रिक टन हुआ। धान के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 0. 83 लाख हे0 है जो जिले के कुल क्षेत्रफल के लगभग 23.1 प्रतिशत है।

गेहूँ :- धान के बाद गेहूँ इस जिले का महत्त्वपूर्ण खाद्यान है। जिले में 2015-16 के अनुसार कुल उत्पादन 0.77 लाख मिट्रिक टन रहा। गेहूँ की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर यहाँ 2048 किलोग्राम रहा। इसका उत्पादन जिले में सभी जगह होता है। परन्तु जहाँ सिंचाई की व्यवस्था है वहाँ इसकी खेती अधिक होती है।

मक्का :- धान तथा गेहूँ के बाद जिले में मक्का तीसरा महत्त्वपूर्ण फसल है। यह फसल भदई, अगहनी तथा रब्बी तीनों ऋतुओं में उगाई जाती है। सिंचाई की सुविधा उत्तम नए बिजों के प्रयोग से इसमें काफी वृद्धि हुई हे। इसके लिए दोमट मिट्टी अधिक उपर्युक्त है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र भदई मक्का के उत्पादन के लिए उत्तम है। जिले में 2015-16 के आँकड़े के अनुसार मक्के का उत्पादन 0.01 लाख टन हुआ जो राज्य के कुल उत्पादन का 0.07 प्रतिशत है एवं इसकी उत्पादकता 2791 किलोग्राम प्रति हे0 है। यहाँ गरमा एवं भदई दो प्रकार की मक्के ज्यादा उपजायी जाती है। गरमा मक्का का उत्पादन 570 किलोग्राम प्रति हे0 एवं भदई मक्का का उत्पादन 682 किलोग्राम प्रति हे0 हुआ है।

गन्ना :- जिले में गन्ने के उत्पादन के लिए भौगोलिक परिस्थितियाँ लगभग अनुकूल मिलती है। गन्ने के उत्पादन के लिए ऊष्णार्द्र जलवायु, भारी दोमट मिटी, सिंचाई की सुविधा तथा मनव श्रम की आवश्यकता पड़ती है। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग अधिक अनुकूल है। इस भाग में नहरों द्वारा सिंचाई की सुविधा मिल जाती है। उत्तर-पश्चिम भाग में इसकी खेती काफी गहनता से की जाती है। लेकिन अगल-बगल चीनी मिल के नहीं होने के कारण इसका उत्पादन कम हो रहा है। केवल किसान अपना घरेलू उपयोग एवं गुड़ बनाने हेतु गन्ना की खेती करते हैं।

जहानाबाद जिले में 2015-16 में 0.02 लाख टन गन्ना उत्पादन हुआ जो राज्य के कुल उत्पादन का 0.91 प्रतिशत है एवं यहाँ की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 39.00 टन हुआ। अन्य फसलों में दलहन, तेलहन प्रमुख है। दलहन में खेसारी, मसूर, मूंग एवं चना महत्त्वपूर्ण है। तेलहन में तीसी एवं सरसों की खेती की जाती है। सब्जियों में आलू, प्याज तथा अन्य हरी सब्जियाँ प्रमुखता से उपजायी जाती है जिनकी स्थानीय माँग अधिक है। इस तरह ख़ज़ि कार्य जहानाबाद का आर्थिक मेरूदण्ड है और इसीलिए ख़ज़ि एवं कृषि से जुड़ी जमीन ज्यादा अर्थपूर्ण है।

फसल साहचर्य प्रतिरूप :- इसे फसल संयोजन प्रदेश भी कहते हैं। इसका अध्ययन कृषि-भूगोल का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि यह कृषिय प्रादेशीकरण का एक सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करता है। प्रायः फसलों को दूसरी फसलों के साथ संयोजित कर उत्पन्न किया जाता है। ऐसा बहुत कम ही देखा जाता है कि एक-फलस विशेष दूसरी फसलों से अलग-अलग रहकर एक समय में निर्धारित क्षेत्र इकाई को घेरही हो। फसलों के वितरण को प्रकट करने वाले मानचित्र रोचक और नियोजकों के लिए उपयोगी होते है। लेकिन इनका महत्त्व इसलिए और भी अधिक है क्योंकि ये क्षेत्रीय-इकाई की विभिन्न फसलों की सम्बन्धित तस्वीर प्रस्तुत करते है। कृषि-प्रदेश की विस्तृत जानकारी के लिए वहाँ के फसली-प्रारूपों को समझने के लिए और उनके भविष्य में सुनियोजित कार्यक्रमों का आधार फसल संयोजन की वैज्ञानिक जानकारी है। यह कृषि साहचर्य प्रतिरूप वर्षा की मात्र, वितरण, मिटी, धरातल आदि प्राकृतिक कारकों तथा कृषकों की आर्थिक स्थिति, सिंचाई, बाजार, फसलों की कीमत आदि कारकों पर निर्भर करता है।

प्रो0 आर0 एल0 सिंह ने अपनी पुस्तक 'भारत' में बिहार के कृषि-प्रदेशों की फसल साहचर्य के आधार पर 7 कृषि-प्रदेशों में बाँटा है।

इसी प्रकार प्रो0 आर0 पी0 सिंह एवं ए0 कुमार ने भी अपनी पुस्तक 'मोनोग्राफ ऑफ बिहार' में 10 कृषि प्रदेशों का विवरण प्रस्तुत किया है।

फसल साहचर्य के आधार पर धान के अलावा दो अन्य फसलों की प्रधानता के आधार पर प्रो0 आर0 बी0 सिंह ने भी बिहार को 8 कृषि प्रदेशों में विभाजित किया। जहानाबाद जिला क्षेत्र में भी धान पहला फसल तथा दो अन्य फसलों के आधार पर इस प्रदेश का निम्न प्रकार से 7 सूक्ष्म कृषि प्रदेशों में बाँटा गया है।

तालिका-3

जहानाबाद जिला में फसल साहचर्य का क्षेत्रीय प्रारूप : 2015-16

क्र0 सं0	फसल-साहचर्य	अंचलों की संख्या	अंचलों का नाम
1.	धान-गेहूँ-दाल	09	रतनी फरीदपुर, इलाहानाबाद, मेदनगंज,काको
2.	धान-गेहूँ-मक्का	03	घोसी, हुलासगंज, मकदुमपुर
	कुल	**12**	

कृषि की समस्याँ :-

1. विषम स्थालाख़ति की समस्या,
2. मिटी कटाव की समस्या,
3. निम्न किस्म के बीजों का प्रयोग,
4. रासायनिक खाद का प्रयोग,
5. खेतों के छोटे आकार की समस्या,
6. श्रोग तथा कीड़ों की समस्या,
7. किसानों में रूढ़िवादिता की समस्या,
8. सिंचाई की समस्या,
9. पूंजी की अपर्याप्तता,
10. पशुओं की दयनीय दशा,
11. तीव्रगति से जनसंख्या वृद्धि की समस्या,
12. बाढ़ की समस्या,
13. हाल की जलवायु परिवर्तन की समस्या-कभी अतिवृष्टि तथा कभी सूखाड़ की समस्या,
14. अन्य आर्थिक एवं सामाजिक (उग्रवाद) समस्या।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. हुसैन, माजिद (2006), कृषि भूगोल, (जयपुर, रावत पब्लिकेशन), पृष्ट 103-04.

2. वही, पृष्ट 108-10.

3. पंडित, बाढू एवं गुप्ता, अनिल कुमार (2006), बिहार का भौगोलिक अध्ययन, (आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स), पृष्ट सं0 54-57.

4. सिंह सविन्द्र (1991), पर्यावरण भूगोल, (इलाहाबाद, प्रयाग पुस्तक भवन), पृष्ट सं० 362-63.

5. वर्मा, पी० सी०, बिहार की अर्थव्यवस्था, (टी० यू० पब्लिशर्स डिस्ट्रीव्यूटर्स), पृष्ट सं० 131-32.

6. Hunker, H.L., Zimmerman's Introduction to World Resources (New York, Harbers Row Publications), P. 28.

7. Prasad, M., Land-Man-Symbiosis of Jehanabad District (Bihar) in Magadh Geographical Review, Vol. IV, No. 5.

8. Zimmermann, W., (1951), World Resources and Industries, (New York, Harper and Row Publishers), P. 51.

♦ ♦ ♦